REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 8 | MAY - 2023

कटनी जिला में अनुसूचित जातियों की अल्प आर्थिक गतिविधियों का मूल्यांकन

फूलचन्द कोरी[1] , डॉ. एस.एम. प्रजापति[2]
[1]शोधार्थी भूगोल, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]सहायक प्राध्यापक भूगोल,शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुढ़ार, जिला शहडोल (म.प्र.)

सारांश –

कटनी जिला मध्यप्रदेश के जबलपुर संभाग में विद्यमान है। भारतीय संविधान की धारा–342 के तहत अनुसूचित जातियों को मान्यता प्रदान कर, इस जाति वर्ग को विशिष्ट दर्जा दिया गया है। भिन्न–भिन्न भौगोलिक अंचलों और परिस्थितियों के परिक्षेत्र में निवासित और सीमित सुविधाओं की कमी की वजह से अनुसूचित जातियां काफी अधिक पिछड़ी और उपेक्षित जीवनयापन कर रहा है। अनुसूचित जाति बहुसंख्यक रूप में नगरीय और शहरी अंचलों में टूटे–फूटे घरों, गन्दी बस्ती और आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण से उपेक्षित वर्ग के रूप में परिलक्षित होता है। इस जाति वर्ग की स्थिति अत्यन्त दयनीय हैं, शिक्षाविहीन ये जातियां अपनी जीविका मजदूरी कर चलाते हैं। समय में इस जाति वर्ग के लोगों को उपेक्षित दृष्टि से देखा जाता है। अनुसूचित जातियाँ वर्तमान समय में भी आजादी के 75 वर्ष पूरा होने के पश्चात भी देश में आर्थिक दृष्टिकोण से अत्यन्त दयनीय और पिछड़े हुए दशा में अपना जीवन व्यतीत करने हेतु विवश हैं। भारत की 104281034 आबादी इसी बदतर श्रेणी के अन्तर्गत आता है। इनका लिंगानुपात एक हजार पुरूषों में 952 महिलाएं हैं, जन्म घनत्व 261 प्रतिवर्ग किलोमीटर है।

मुख्य शब्द – अनुसूचित जातियां, आर्थिक दृष्टिकोण, एवं भारतीय संविधान ।

प्रस्तावना –

अनुसूचित जातियों की सामाजिक–आर्थिक विकास से आशय सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन की एक विशेष प्रक्रिया से है। अतएव सामाजिक–आर्थिक विकास से तात्पर्य प्रायः एक राज्य या क्षेत्र विशेष में जो मानव अनुकूल सुधार एवं सकारात्मक परिवर्तन होते हैं, उन्हें प्रायः विकास के रूप में परिभाषित किया जाता है, अपितु विकास की अवधारणा को अनेक संदर्भो, सामाजिक, आर्थिक, प्रौद्योगिकी, जीव विज्ञान, भाषा, साहित्य, भौगोलिक पर्यावरण इत्यादि में भिन्न–भिन्न तरीकों से उल्लेखित/अभिव्यक्त किया जाता है। इस प्रकार सामाजिक–आर्थिक संदर्भ में विकास से तात्पर्य उचित शिक्षा, कौशल, विकास, आय वृद्धि एवं रोजगार द्वारा मनुष्यों के जीवन शैली में यथासंभव सुधार से है और यह सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय कारकों के आधार पर आर्थिक व सामाजिक बदलावों की एक प्रक्रिया है। इस दृष्टिकोण से सामाजिक, आर्थिक विकास सामाजिक परिवेश में सामाजिक व

आर्थिक परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो सकल घरेलू उत्पादन, मानव जीवन प्रत्याशा, साक्षरता एवं रोजगार के स्तरों अथवा संकेतकों के रूप में मापा जाता है। इन दोनों के समेकित स्वरूप को और व्यापक स्तर पर समझने हेतु इन्हें अलग–अलग रूपो में भी स्पष्ट करना अति आवश्यक होगा, अतएव मानवीय जीवन में सामाजिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है, जो सामाजिक निकाओं/संस्थाओं में बदलाव कर समाज के स्वयं की अनिवार्यताओं को पूर्ण करने की क्षमता में सुधार करती है और इसका सम्बन्ध सशक्त मानवीय समाज के निर्माण में गुणात्मक बदलाव, समाज के व्यक्तियों का प्रगतिशील दृष्टिकोण व व्यवहार, प्रभावी प्रक्रियाओं और बेहतर प्रौद्योगिकी की तकनीक को अपनाते हैं।

प्राचीन काल से ही मानवीय कृत समाज के निर्वहन का प्रमुख स्तर आर्थिक गतिविधियों की विशेषता रही है। अनादिकाल से ही वस्तुओं एवं सेवाओं के आदान–प्रदान की प्रक्रिया चलती आ रही है, आरम्भिक समयों में यह क्रिया वस्तु विनियम प्रणाली अर्थात् वस्तुओं के आदान–प्रदान के साथ प्रारम्भ हुई थी। साक्ष्य के रूप में किसी क्षेत्र से दूसरे अन्य क्षेत्र में अनेक खाद्यान्नों का आदान–प्रदान, जिसका उपयोग मानव समुदाय द्वारा एक दूसरे की उदर संतुष्टि एवं कपड़ों की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने हेतु वस्तु विनिमय व्यापार के रूप में भली भांति जानते हैं। इस व्यवस्था ने धीरे–धीरे सामन्ती अर्थव्यवस्थाओं से औद्योगिक क्रान्ति हेतु कुछ वर्षों पूर्व ही बहुराष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय निगम का स्वरूप ग्रहण कर लिया है। कुछ समय बीतने के पश्चात् इससे वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण के सिद्धान्तों के साथ अर्थव्यवस्था के नवीनतम स्वरूप में प्रवेश किया है। आर्थिक गतिविधियों के विभिन्न कारकों के आधार पर अलग–अलग किया जाता है, जिनमें से कुछ प्रमुख कारक प्रकार, मापक या पैमाना, संगठनात्मक और तकनीकी इत्यादि है। आर्थिक गतिविधियों को वर्गीकृत करने के सर्वाधिक सरल तकनीकों में किसी प्रक्रिया के उत्पाद के प्रकारों का प्रेक्षण/अवलोकन करना होता है। अनेक क्षेत्रों/उद्योगों/सेवाओं में आर्थिक गतिविधियों के असंख्य स्वरूपों के अलग–अलग करके, मानव वस्तु उत्पादन के नूतन तरीकों, अनेक देशों एवं मानवीय समाजों के सभी क्षेत्रों में लगे कार्यवल के वास्तविक अनुपात को जान सकते हैं। अतः आर्थिक गतिविधि वास्तव में वस्तुओं के उत्पादन, वितरण या उपभोग को सम्मिलित किया जाता है, उन्हें आर्थिक गतिविधियां कहा जाता है।

विश्लेषण –

आर्थिक विकास से आशय, किसी क्षेत्र विशेष में निवास कर रहे व्यक्तियों के हितों में आर्थिक सम्पत्ति के सम्वर्धन को आर्थिक विकास कहा जा सकता है। इस प्रकार आर्थिक विकास से तात्पर्य एक राष्ट्र द्वारा अपने लोगों की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक हितों को पूर्ण करता है। सामाजिक–आर्थिक विकास का प्रमुख ध्येय मानवों का आर्थिक एवं सामाजिक दोनों स्तरों पर विकास करना। सामाजिक–आर्थिक विकास के फलस्वरूप पर्यावरण में अत्यन्त ही गिरावट आयी है। वर्तमान आर्थिक विकास के कारण हमारी पर्यावरणीय क्षति बहुत अधिक हुई है, जिसके पीछे मनुष्यों का सबसे बड़ा हाथ है। सामाजिक–आर्थिक विकास अनेक तरीकों से सुधार करने के एक ऐसी सचेतन प्रक्रिया है जो किसी देश में मानव जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करना होता है। विभिन्न युगों में विकास को अलग–अलग रूपों में विश्लेषित किया गया है। प्राचीनकाल में अध्यात्मिक लक्ष्यों को प्राप्त करने को सामाजिक–आर्थिक विकास माना जाता था, लेकिन वर्तमान में भौतिक लक्ष्यों की प्राप्ति एवं सुख सुविधाओं में वृद्धि करने को ही सामाजिक–आर्थिक विकास की संज्ञा दी जाने लगी है। मानवीय आर्थिक विकास का सामाजिक मूल्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, इसलिए स्पष्ट होता है कि सामाजिक–आर्थिक विकास मानवीय समाज द्वारा स्वीकृत मूल्यों की ओर बदलाव से है, जिससे मानवीय सुखों एवं कल्याण में वृद्धि होती है।

कटनी जिला के विकासखण्डों में निवासरत अनुसूचित जातियों के बीच अल्प आर्थिक गतिविधियों के होने के कारण इनका विकास बहुत ही मंद गति से हो रहा है, अनुसूचित जाति वर्ग के अधिकांश लोक प्रकृति के नजदीक रहते हैं अर्थात् इनका जीवन प्राकृतिक जंगलों से प्राप्त उत्पादों पर आश्रित है, इसलिए इनका विकास अभी भी उच्च वर्गों के समान नहीं बन पाया है। अनुसूचित जाति वर्ग के लोग उद्यम स्थापित करने के क्षेत्र में समाज के अन्य दूसरे वर्गों की अपेक्षा साहसी कम होते हैं, जिसकी वजह से वे रिस्क नहीं लेना चाहते हैं, अपितु अल्प आर्थिक गतिविधियों के होने के कारण भी वे आर्थिक क्रिया में स्वतंत्र रूप से भाग लेने में संकोच करते हैं, आज भी इस जाति वर्ग के अधिकांश व्यक्ति भाग्य की चपलता पर विश्वास कर जीवन व्यतीत

कर रहे हैं। कटनी जिले की अनुसूचित जातियों के लोगों के बीच अभी भी कृषिगत नवीन तकनीकों का अभाव एवं ज्ञान की पिपाशा कम होने के कारण भी कृषि उत्पादों का अधिकांश हिस्सा स्वयं के उपभोग के लिए ही अपने पास रख लेते हैं, जिससे उनकी आर्थिक गतिविधियां तीव्र नहीं हो पा रही है।

इसकी सत्यता का मापन करने हेतु प्राथमिक स्तर पर साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से सर्वेक्षण के दौरान प्राथमिक तथ्यों को संकलित कर सारणी क्रमांक 1 में प्रस्तुत कर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है, जो निम्नानुसार है –

सारणी क्रमांक 1

अनुसूचित जातियों की अल्प आर्थिक गतिविधियों का मूल्यांकन

क्र.	उत्तरदाताओं का विवरण	परिवारों की संख्या	प्रतिशत
1	अल्प आर्थिक विकास की गतिविधियां उपलब्ध है	226	75.33
2	अल्प आर्थिक विकास की गतिविधियां उपलब्ध नहीं है	74	24.67
	कुल योग	300	100.00

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 1 को देखने से स्पष्ट होता है कि जिले की अनुसूचित जातियों की अल्प आर्थिक गतिविधियों के मूल्यांकन से सम्बन्धित है। जिले के सभी विकासखण्डों से चयन किये गये कुल 300 उत्तरदाताओं में 226 उत्तरदाताओं ने स्वीकारा है कि अल्प आर्थिक विकास की गतिविधियां मौजूद है, जिनके प्रतिशत 75.33 है। इसी प्रकार 74 उत्तरदाताओं ने बतलाया कि अल्प आर्थिक विकास की गतिविधियों मौजूद नहीं है, जिनके प्रतिशत 24.67 है।

कटनी जिले में अनुसूचित जातियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर पर प्रभावों का प्राथमिक समंकों के आधार पर आकलन करने के पश्चात् अनुसूचित जातियों के स्वास्थ्य सम्बन्धी गतिविधियों का समाकलन करना भी शोध अध्ययन की पूर्णता की दृष्टि से आवश्यक है, क्योंकि अनुसूचित जातियों की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों का मूल्यांकन करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि इस जाति वर्ग के सभी पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित कर इनके सम्पूर्ण आर्थिक व सामाजिक पक्षों पर व्यापक प्रकाश डाला जाय, ताकि इनके सामाजिक–आर्थिक विकास की सम्पूर्ण खामियों व खूबियों को उजागर किया जा सके और उन्हीं के अनुरूप शासन को इस शोध अध्ययन के माध्यम से निर्देशित किया जा सके कि इनके सामाजिक–आर्थिक विकास हेतु नवीन पहल किस आधार पर किया जा सकता है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कटनी जिले के सबसे अत्यधिक चयनित उत्तरदाताओं ने बतलाया कि अल्प आर्थिक विकास की गतिविधियां उपलब्ध है। जिले में इस जाति के समुदायों में आधुनिक दौर में भी ज्ञान का अभाव विद्यमान है और ज्ञान के अभाव के कारण ये जातियां किसी भी व्यवस्था/उद्यम को करने हेतु साहस नहीं कर पाते है। आज भी इन जातियों के भीतर अपने प्राचीन कार्यों को करने की भावना निहित है। अतः इन्हें प्रोत्साहन प्रदान करना अनिवार्य है। प्रोत्साहन से ही इनके अंदर से रूढ़िवादिता को दूर किया जा सकता है। कटनी जिले में निवास करने वाले अनुसूचित जातियों को शिक्षा के महत्व के बारे में अधिक से अधिक प्रचार–प्रसार करना होगा ताकि ये शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित हो सके। जिले की ये जातियां शिक्षा के माध्यम से अपने जीवन स्तर को परवर्तित कर सकेंगे। किसी भी व्यवसाय/उद्यम करने के लिए व्यक्ति का पढ़ा लिखा होना अत्यन्त अनिवार्य होता है क्योंकि शिक्षा के बगैर वह अपनी आर्थिक स्थिति को कदापि नहीं सुधार कर सकता है। अतः जिले के व्यक्तियों को रोजगार सम्बन्धी प्रशिक्षण उपलब्ध करवाना होगा ताकि इनका लाभ लेकर इस जाति वर्ग के व्यक्ति अपनी अल्प आर्थिक विकास की क्रियाकलापों को पूरा कर सके।

संदर्भ –

1. मिश्रा, डॉ. जय प्रकाश – जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ 60, वर्ष 2021.
2. Agrawal, S.K. - Principle of Demography, page 40-41.
3. मिश्रा, डॉ. जय प्रकाश – जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ 59, वर्ष 2021.
4. गुप्ता, एम.एल. – सामाजिक विज्ञान की भूमिका, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ 438, वर्ष 1999.
5. गुप्ता, एम.एल. – सामाजिक विज्ञान की भूमिका, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ 439, वर्ष 1999.